केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में एक दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन

प्रेस विज्ञप्ति
करनाल, 17 अप्रैल 2025

आईसीएआर–केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में आईसीएआर–राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के सहयोग से द्वारा एक दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अनुसूचित जाति के किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों, संसाधनों और सहायता से जोड़कर उनकी कृषि उत्पादकता और आय में वृद्धि करना था। यह कार्यक्रम डॉ. रामचरण भट्टाचार्य, निदेशक, आईसीएआर–राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली और डॉ. आर के यादव, निदेशक, केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के मार्गदर्शन में सफल हुआ।

इस अवसर पर बागवानी प्रशिक्षण संस्थान, करनाल की विशेषज्ञ डॉ. प्रतिभा एवं डॉ. दिनेश कुमार ने फल विशेषकर आम की खेती को आयवर्धन का सशक्त माध्यम बताया और किसानों को अपनी खेती में विविधता लाने का सुझाव दिया। डॉ. प्रतिभा ने विशेष रूप से महिला किसानों को संबोधित करते हुए अचार, मुरब्बा, आलू चिप्स, और चटनी जैसे मूल्य संवर्धित उत्पादों को बनाने की सलाह दी जिससे घरेलू आय में वृद्धि के साथ–साथ महिलाओं को कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का अवसर मिलेगा। कार्यक्रम में राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, सलारू, करनाल से आमंत्रित विशेष अतिथि डॉ. आलोक कुमार ने प्याज और लहसुन जैसी फसलों में गुणवत्ता युक्त पौध सामग्री के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने किसानों को इन फसलों में सर्वोत्तम कृषि पद्धतियाँ अपनाने की सलाह दी, जिससे बेहतर पैदावार और बाजार मूल्य सुनिश्चित किया जा सके। डॉ. मनोज पाठक ने जैविक और प्राकृतिक खेती को अपनाने पर बल दिया और विशेष रूप से सब्जी फसलों में प्राकृतिक कीट नियंत्रण विधियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पर्यावरण–अनुकूल खेती मानव स्वास्थ्य के साथ–साथ कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए आवश्यक है। इस अवसर पर एनआईसीपीबी, नई दिल्ली के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पी.के. जैन ने किसानों को प्रदान की गई प्रशिक्षण किट के प्रभावी उपयोग एवं उससे फसल उत्पादन तथा निगरानी में होने वाले लाभों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह योजना अनुसूचित जाति के किसानों के उत्थान और उनकी कृषि प्रथाओं को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी।

कार्यक्रम के मुख्य अथिति डा. राजेन्द्र कुमार यादव, निदेशक, केमृलअनुसं, करनाल ने अपने भाषण में कहा कि इस क्षेत्र के किसानों को अपनी आय बढ़ाने के लिये अधिक लाभप्रद उद्यमों जैसे बागवानी डेयरी, मछलीपालन एवं फूडप्रोसेसिंग को अपनाना चाहिये। समेकित कृषि प्रणाली किसानों की आय दोगुनी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस प्रणाली में धान–गेहूँ के साथ–साथ कृषि वानिकी, बागवानी व मछली पालन शामिल हैं। छोटी जोत के किसानों के लिये यह प्रणाली एक वरदान शामिल हुई है। उन्होंने सभी किसानों से आह्वान किया कि नई तकनीकियों के बारे में जो ज्ञान वह प्राप्त करके जायें उसका अपने–अपने क्षेत्र में उपयोग व प्रचार–प्रसार अवश्य करें ताकि किसानों को अधिक से अधिक लाभ हो। इस प्रशिक्षण में हरियाणा के करनाल जिले के विभिन्न गाँवों से आए लगभग 400 किसान शामिल हुए, जिनमें 240 महिला किसान सम्मिलित थी। कार्यक्रम के समापन पर किसानों को सौर ऊर्जा से चलने वाली टॉर्च और कृषि किट बैग वितरित किए गए, जिनमें उन्नत बीज और अन्य कृषि उपयोगी सामग्री शामिल थीं। कार्यक्रम संचालन डॉ. अनिल कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. राजकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केमृलअनुसं एवं डॉ. मोनिका दलाल, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. कनिका, प्रधान वैज्ञानिक व श्री दीपक राठौर एनआईसीपीबी, नई

दिल्ली द्वारा किया गया। इस दौरान डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. कैलाश प्रजापत और श्री विकाश खोखर भी मौजूद रहे।